भावेशफलध्याय

सीमा नायक*
एमए, (स्वर्ण पदक विजेता), ज्योतिष शास्त्र, जीवाजी यूनिवर्सिटी, ग्वालियर

सार - फलादेश में सबसे अधिक महत्व भाव भावेश कारक का होता है, इन तीनों की तुलनात्मक समीक्षा के बाद ही कोई निर्णय लिया जाना चाहिए।

----------X----------

भाव

कुंडली के 2 घरों या खानों को भाव कहते हैं, ये ।2 भाव हमारे जीवन और संसार की कारको वस्तुओं को विभिन्न स्थलों पर प्रभावित करतीं हैं ,जो ज्योतिष इन् कारक वस्तुयों को जितना अधिक जानता है , वह उतना अधिक और सही फलादेश कर पाता है।

राशि की तरह भाव संख्या 2 है लेकिन ये भिन्न होते हैं। राशियां और भाव 30-30 अंश होने के पश्चात , एक दूसरे से छोटे होते हैं, लग्नभेद (स्थानभेद) से ये छोटे बड़े हो जाते हैं। भावों के छोटे बड़े होने के कारण, दशम भाव स्पष्ट (लग्न से दसवीं राशि का मध्याय) कई बार नवम या एकादश भाव में बढ़ जाता है और चलित में कई बार ग्रह एक नही दो भाव आगे पीछे हो जाता है।

भावेश

भाव विशेष में स्थित राशि का स्वामी ग्रह ही उस भाव का स्वामी होता है , जिसे भावेश कहते हैं, आम तौर पर:

1. प्रथम भाव में स्वामी को लग्नेश
2. द्वितीय भाव के स्वामी को धनेश
3. तृतीय भाव के स्वामी को तृतीयेश या सैहेजेश
4. चतुर्थ भाव के स्वामी को सुखेश या चतुर्थेष
5. पंचम भाव के स्वामी को सुतेश या पंचमेश
6. छटे भाव के स्वामी को रोगेष या फिर षष्ठेश
7. सप्तम भाव के स्वामी को जयेश या सप्तमेश
8. अष्टम भाव के स्वामी को ऋणशेष या अष्टमेश
9. नवम भाव के स्वामी को भाग्यशैष या नवमेश
10. दशम भाव के स्वामी को दशमेष या कर्मेश
11. एकादश भाव के स्वामी को आयेश या एकादशैष
12. द्वादश भाव के स्वामी को व्ययेश

भावेश फल

1. लग्नेश लगन में ही तो जातक शरीर से सूखी शुभ कार्यों में प्रेम करने वाला , खुद्दार, स्वाभिमानी, चंचल विचार वाला, दो पत्नियों वाला, फिर भी परस्त्रीगामी होता है।
2. द्वितुय में लग्नेश रहने से जातक लाभ पाने वाले, विद्वान, सुखी, सुशील, धर्मवेता, मानयुक्त या स्वाभिमानी, अनेक स्त्रियों वाला गुणी होता है।
3. तृतीयेश लग्नेश में सिंघवत पराक्रमी, सब संपत्ति से युक्त , अभिमानी, दो पत्नियों से युक्त, बुद्धिमान व सुखी होता है।
4. चतुर्थेष लग्नेश से माता पिता के सुख से युक्त अनेक भाइयों वाला, कामुक रुझाव गुणी होता है।
5. लग्नेश पंचम में हो तो मनुष्य को पुत्र सुख मध्यम संतोष जनक होता है, उसकी पहली संतान अल्पायु होती है तथावह क्रोधी, राजमान्य होती है।

www.ignited.in

6. षष्ठम लग्नेश से शरीर सूखरहित, पापयुक्त भी हो तो शत्रुओं से भय और पीड़ा होती है। यदि श्रम में शुभ ग्रह हो तो अशुभ फल कम होता है।

7. यदि लग्नेश सप्तम में है तो तथा साथ ही पापी ग्रह हो तो भार्या के लिए कष्टकारी होता है, यदि शुभ लग्नेश सप्तम में हो तो ब्रह्मनशील या प्रसिद्ध या राजा होता है।

8. लग्नेश यदि अष्टरम में हो तो मनुष्य की रुचि या कौशल (तंत्र मंत्र , जादुगरी, गुप्तविधि में) होता है। वह प्रायः रोगी , चोर, स्त्रीगामी, जुआड़ी होता है।

9. नवम में लग्नेश हो तो मनुष्य भाग्यवान, लोकप्रिय, विष्णुभक्त, वाग्मी, स्त्री पुत्र धन से युक्त होता है।

10. यदि लग्नेश दशम में हो तो मनुष्य प्रायः पिता के सुख से वंचित रहता है। वह राज्यमान्य, प्रसिद्ध और अनेक गुणों से युक्त होता है।

11. लग्नेश द्वादश में हो तो मनुष्य के शरीर में सुख में अल्पता, व्यर्थ खर्च करने वाला, क्रोधी स्वभाव का होता है। यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो यह फल नहीं होते।

धनेश फल

1. लग्नेश धनेश से स्वकुटुम्ब से विद्रोह करने वाला व्यक्ति होता है, साथ ही धनी, कठोर हृदय वाला, कामुक, पुत्रवान तथा दूसरों के काम आने वाला होता है।

2. धनेश धन भाव में ही हो तो मनुष्य गरवली धनी तथा दो या अधिक पत्नियों वाला पुत्रहीन होता है।

3. तृतीयेष शुभ धनेश से पराक्रमी, बुद्धिमान, गुणवान, कामी लोभी होता है।

4. चतुर्थ भावस्थ धनेश से सर्व सम्पदाओं का विधान होता है, यदि इतियेश गुरु से युक्त होकर चतुर्थ में उच्चस्थ हो तो मनुष्य राजा समान होता है।

5. इतियेश पंचमेश हो तो धनि तथा धन कमाने आतुर पुत्रो का पिता होता है।

6. धनेश षष्ठम में तथा शुभ ग्रहों से युक्त हो तो शत्रुओं से धन लाभ होता है। यदि पापयुक्त हो तो शत्रूयों से धन हानि अधिक होती है।

7. यदि धनेश सप्तम में पाप ग्रह से युक्त हो तो पत्नी व्यभिचारीनि होती है , स्वयं पुरुष भी परस्त्रीगामी होता है।

8. अष्टमेश धनेश से मनुष्य बहुत धन से पति वाला पत्नी सुख कम पाने वाला तथा बड़े भाई के सुख से वंचित रहता है।

9. नवमेश धनेश तीर्थ, व्रत, धर्म में रत कार्य, बचपन में रोगी पर बाद में सुखी, सौंदर्य, सदैव परिश्रम करने वाला होता है।

10. धनेश दशम हो तो मनुष्य कामी, स्वाभिमानी, विद्वान , बहुत धनी, बड़े परिवार वाला, लेकिन पुत्र सुख में कमी होने वाला होता है।

11. एकदशमस्त धनेश सभी लाभ पाने वाला सदैव परिश्रम करने वाला, कीर्तियुक्त होता है।

12. व्यवस्त धनेश से साहसी धनहीन राजा के निकट रोज़गार कमाने वाला पुत्र से सुखरहित होता है।

तृतीयेश भावफल

1. लग्नस्थ तृतीयेश से मनुष्य अपनी शक्ति से धन कमाने वाला होता है, सैवा चतुर साहसी विद्या हीन होते हुए भी बुद्धिमान होता है

2. द्वितीय तृतीय से मनुष्य गुदामैथुन करने वाला मोटा छोटी शुरुआत करने वाला सुख से रहित दूसरों की नारी व धन की कामना करने वाला होता है

3. तृतीयेश यदि तृतीय स्थान तो भाई पुत्र आदि से संयुक्त धनी प्रसन्न चित्त विविध सुखों को भोगने वाला होता है।

4. यदि तृतीय 4,5 0 भाव में हो तो मनुष्य सुखी धनी बुद्धिमान पुत्र वान लेकिन क्रूर स्त्री वाला होता है।

5. छठे भाव में स्थित प्रदेश से भाइयों से बैठ महा धनी मामा से शत्रुता पर मामी से प्यार करने वाला होता है 6- तृतीय

www.ignited.in

6. यदी 7 और 8 भाव में हो तो मनुष्य राज्य की सेवा करने वाला तथा सेवा में ही मरने वाला दास बचपन में सुखी या चोर होता है

7. नवस्त प्रत्येक पिता के सुख से रहित स्त्री के कारण भाग्योदय पाने वाला पुत्र आदि के सुख से आदि से युक्त होता है।

8. तृतीय एकादश भाव में हो तो व्यापार में सदा लाभ कमाने वाला कम पढ़ा लिखा होते हुए भी बुद्धिमान साहसी व परायो के काम आने वाला होता है

9. व्ययस्थ तृतीयेश कुकार्यों में धन व्यय करने वाला क्रूर पिता का पुत्र तथा स्त्री के कारण भाग्योदय होता है।

चतुर्थेश का फल

1. सुखेश लग्न में हो तो मानव विद्यावान जमीन जायदाद वाला वाहन युक्त माता का सुख पाने वाला होता है।

2. द्वितीय चतुर्थेश से मनुष्य सुख भोगने वाला सब प्रकार के धनो(पुत्र सुख संचित धन,) पशु वाहन भूमि धन आदि

3. कुटुंब वाला भाग्यवान साहसी लेकिन मायावी वाह दिखावा करने वाला होता है।

4. तृतीय चतुर्थी से मनुष्य पराक्रमी नौकर चाकरों वाला उदार गुणवान दाता धनी लेकिन सदैव किसी ना किसी रोग से पीड़ित करता है।

5. चतुर्थ में चतुर्थेश हो तो मनुष्य सम्माननीय सब धन से युक्त चतुर चरित्रवान अच्छा सलाहकार ज्ञानी व सुखी होता है।

6. चतुर्थेश 5,9 भाव में हो तो जातक सुखी लोकप्रिय देवताओं में भक्ति रखने वाला स्वाभिमानी अच्छे गुणों व धन से युक्त होता है।

7. चतुर्थेश षष्ट में हो तो माता के सुख से रहित ,क्रोधी, तांत्रिक ,चोर दूषित क्रियाएं करने वाला स्वेच्छाचारी व दूषित विचार वाला होता है।

8. चतुर्थेश सप्तम में हो तो मनुष्य बहुत विद्यावान, पिता के धन का स्वेच्छा से त्याग करने वाला, सभा में बहुत कम बोलने वाला होता है।

9. चतुर्थेश 8,।2भाव में हो तो मनुष्य आवास के सुख से वंचित होता है माता-पिता का कम सुख पाने वाला तथा रतिक्रिया में निर्बल होता है।

10. चतुर्थेश दशम भाव में हो तो मनुष्य राजमान्य सुखी रसायन जानने वाला बहुत प्रसन्न चित्त भगवान परंतु जितेंद्रिय होता है

11. चतुर्थेश दशम भाव मैं हूं तो मनुष्य राजा की तरह सुखी विविध विद्या को जानने सदैव प्रसन्न रहने वाला एवं जितेंद्रिय होता है।

12. चतुर्थेश यदि एकादश भाव में हो तो मनुष्य सदा रोग,भय से पीड़ित रहता है,साथ ही उदार,गुणवान स्व परिश्रम से नी होता है।

पंचमेश भावफल

1. पंचमेश यदि लग्न में हो तो मनुष्य विद्वान गुणवान कुटिल तथा स्वार्थी सदा धन संग्रह करने वाला होता है

2. पंचमैश यदि द्वितीय में हो तो अनेक पुत्र वाला धनी बड़े परिवार का पालन करने वाला स्वाभिमानी लोकप्रिय होता है

3. पंचमेश तृतीय में हो तो भाई का प्यारा मायावी चुगल खोर सदैव स्वार्थ सिद्धि में लगा रहने वाला होता है

4. पंचमी चतुर्थ में हो तो लंबे समय तक माता का सुख पाने वाला धनी लक्ष्मी संयुक्त सुबोध मंत्री या गुरु होता है

5. पंचमेश पंचम में रहने से कई पुत्र होते हैं ऐसा व्यक्ति क्षण में तुष्ट तथा क्षण में रुष्ट होता है कठोर भाषा धार्मिक पर बुद्धिमान होता है

6. यदि पंचमेश सप्तम भाव में हो तो मनुष्य स्वाभिमानी धार्मिक विचारों वाला धर्म पालक मजबूत शरीर वाला पुत्र वान तेजस्वी होता है।

7. यदि पंचमेश अष्टम में हो तो पुत्र सुख से अलपता ह या स्वास रोग क्रोधी बदली होता है

8. यदि पंचमेश नवम भाव में हो सुपुत्र राजा यह राज तुल्य होता है अथवा व्यक्ति स्वयं ग्रंथ कार होता है।

www.ignited.in

9. पंचमेश दशम भाव में हो तो मनुष्य को राजयोग व संतान सुख प्राप्त होता है अनेक सुखों को भोगने वाला होता है

10. पंचमेश एकादश भाव में हो तो मनुष्य विद्वान लोकप्रिय लेख कार ग्रंथ कार अति दक्ष पुत्रों से युक्त होता है

11. यदि पंचमेश द्वादश भाव मे हो तोमनुष्य पुत्र या संतान का सुख नहीं पाता यदि शुभ पंचमेश हो तो जातक ज्ञानवान वह पुत्रवान होता है।

षष्ठेश का फल

1. षष्टेश लग्न में हो तो जातक रोगी, ख्यातनाम स्वयं अपनी हानि करने वाला धनी स्वाभिमानी व साहसी होता है।

2. पषष्लेश द्वितीय में हो तो जातक साहसी अपने कुल में अग्रणी प्रदेश वासी सुखी उत्तम वक्ता होता है ।

3. पषष्ठेश तृतीय में हो तो मनुष्य ,विरोधी लाल आंखों वाला, प्रतापी किसी को बस में ना कर सकने वाला होता है।

4. पषष्ेश चतुर्थ में हो तो माता का सुख कम ,स्वाभिमान की अधिकता ,चुगल खोर, दोष भाव रखने वाला भाई भी शत्रु के समान प्रतीत होता है

5. पषष्लेशपंचम में हो तो मनुष्य का धन चंचल होता है वह दया युक्त, सुखी सौम्य स्वभाव वाला होता है।

6. यदि षष्ठेश षष्टम में हो तो अपने ही बंधुओं से शत्रुता दूसरों से मैत्री सुख माध्यम होता है।

7. यदि षष्ठेश सप्तम में हो तो पुरुष को स्त्री सुख कम होता है लेकिन विख्यात* मानी साहसी होता है।

8. पषष्लेश यदि अष्टम में हो तो मनुष्य रोगी विद्वानों का शत्रु दूसरों के धन की कामना करने वाला पर स्त्री लोलुप होता है

9. यदि षष्ठेश नवम में हो तो लकड़ी का व्यापार करने वाला व्यापार में कहीं बहुत हानी की बहुत मुनाफा करने वाला होता है।

10. सस्ते यदि दशम में हो तो मनुष्य साहसी पिता का प्रिय अच्छा वक्ता होता है।

11. षष्ठेश एकादश में हो तो कीर्तिमान गुणवान माननीय किंतु पुत्र रहित होता है।

12. बारहवें भाव में षष्ठेश से मनुष्य व्यसनी,हिंसक, आक्रामक स्वभाव वाला होता है यदि शुभ ग्रहों से दृश्य हो तो सुख व भोगी होता है।

सप्तमेश भावफल

1. सप्तमेश लग्न में हो तो पर स्त्री गामी दुष्ट तीव्र बुद्धि

2. द्वितीय भाव में हो तो अनेक स्त्रियों का मान मर्दन करने वाला स्त्रियों के संपर्क से धन प्राप्त करने वाला होता है,

3. तृतीय भाव में हो तो स्त्री सुख में कमी तथा पुत्र यत्न पूर्वक जीवित रहते हैं, एवं कभी अल्प संतान होती है,

4. चतुर्थ भाव में सप्तमेश हो तो पत्नी वश में नहीं होती अर्थात स्वेच्छा चारीनी होती है, व्यक्ति स्वयं सत्य प्रिय,बुद्धिमान धर्मात्मा पर दांतो का रोगी होता है ।

5. पंचम भाव में सप्तमेश जातक को स्वाभिमानी सब प्रकार से संपन्न गुणवान वह सदैव हर्ष युक्त बनाता है।

6. सप्तम भाव में सप्तमेश जातक को क्रोधी व सुख से रहित, रोगी पत्नी, या पत्नी से सामंजस्य में कमी होती है।

7. सप्तम में सप्तमेश हो तो मनुष्य स्त्री सुख पाने वाला, बैर्यशील, तीव्र बुद्धि.कामी तथा हृदय रोगी होता है।

8. अष्टम में सप्तमेश स्त्री सुख में रहित या पत्नी रोगिणी, स्वच्छंद अथवा दुष्ट चरित्र होती है

9. सप्तमेश नवम भाव में हो तो जातक अनेक स्त्रियों से संपर्क करने वाला होता है।

10. दशम भाव एकादश भाव में सप्तमेश होतो पत्नी पर नियंत्रण नहीं होता, पत्नी स्वच्छंद विचारों वाली होती है।

11. सप्तमेशद्वादश भाव में हो तो मनुष्य दरिद्र मेला कुचला रहने वाला सुंदर तथा खर्चीली स्वभाव की पत्नी वाला होता है।

अष्टमेशभावफल

1. अष्टमेश लग्न में हो तो शरीर सुख में कमी देवताओं की निंदा करने वाला स्वभाव,सदैव शरीर पर घाव लगने का योग होता है

2. धन भाव या द्वितीय भाव मैं अष्टमी को तो जातक अपने बाहुबल से कमी तथा दूसरो से धन बाला होता है

3. तृतीय भाव में अष्टमेश हो तो भाई का सुख नहीं मिलता वह आलसी तथा सैवकों से रहित ,बल हीन होता है।

4. चतुर्थ भाव मैं अष्टमेश हो तो मनुष्य माता से रहित घर भूमि वह जायदाद के सुख से वंचित मित्र द्रोही होता है

5. अष्टमेश पंचम में हो तो जातक जड़ बुद्धि कम प्रज्ञा वाला धनी व दीर्घायु होता है

6. षष्टम मैं अष्टमेश हो तो शत्रुजीत,दबंग रोगी सर्प व जल से घात खाने वाला होता है

7. अष्टमेश सप्तम में हो तो जातक को दो। पत्नियां होती हैं उसे व्यापार में हानि तथाअष्टमेश पापियों तो हो तो विशेष हानि होती है

8. अष्टमेशअष्टम में ही हो तो मनुष्य दीर्घायु जुआ खेलने वाला चोर व्यस्त बोलने वाला पापी गुरुजनों की निंदा करने वाला होता है

9. अष्टमी नवम स्थान में हो तो जातक महा पापी नास्तिक दुष्ट्र पत्नी वाला दूसरों के धन पर बुरी नियत रखने वाला होता है

10. दशम में अष्टमेश हो तो जातक पिता के सुख से रहित होता है साथी चुगल खोर कर्म हीन होता है

11. अष्टमी एकादश भाव में हो तो तथा पाप युक्त हो तो निर्धन, बचपन में दुखी के बाद सुखी दीर्घायु होता है

12. अष्टमेश व्यय भाव में हो तो जातक को कार्यों में व्यय करने वाला अल्पायु होता है।

नवमेश भावफल

1. यदि नवमेश में हो तो जातक भाग्यवान राज्यवान सुशील स्वामी व्यक्ति होता है साथी विद्यावान भजन पूजित होता है

2. भाग्य द्वितीय भाव में हो तो जातक जनप्रिय पंडित धन्यवाद कामी स्त्री पुत्र आदि के सुखों से भरपूर होता है

3. नवमेश तृतीय स्थान पर हो तो भाई के सुख से युक्त धनवान पराक्रमी रूप गुण व शील से युक्त होते हैं

4. भाग्येश चतुर्थ भाव में हो तो जातक भवन वाहन आदि ऐश्वर्या सुखा से युक्त होता है, जातक पुण्यवान चतुर यशस्वी लोकमान्य वह साहसी होता है

5. पंचस्त भाग्येश से यशस्वी लोकमान्य व साहसी होता है पंचमस्थ भाग्येश यशस्वी होता है,

6. भाग्येश षष्ठमभाव मे हो तो जातक कम भाग्य वाला मामा के सुख से वंचित तथा शत्रु पीड़ित होता है।

7. भाग्य सप्तम भाव में हो तो स्त्री संपर्क से भाग्योदय पाने वाला, कामुक गुणवान,कीर्तिमान पर कहीं-कहीं बाधित सफलता वाला होता है

8. अष्टम भाव में भाग्येश हो तो मनुष्य भाग्यहीन होता है बड़े भाई के सुख से रहित तथा भाग्य की लीलाओं से विशेष संतप्त होता है

9. भाग्येश अगर नवम भाव में हो तो व्यक्ति बहुत अधिक भाग्यशाली गुणवान सुंदर भाइयों से युक्त सैनापति मंत्री या राजा होता है जन सम्माननीय होता है

10. भाग्य एकादश स्थान में हो तो प्रतिदिन लाभ होता है गुरु भक्त स्नेहिल हृदय वाला स्वाभिमानी गुणवान पुण्य कमाने वाला होता है।

11. नवमेश द्वादश भाव में हो तो भाग्य की हानि होती है

12. यदि द्वादश भाव में नवमेश तुला राशि में हो तो विशेष भाग्य हीनता होती है।

www.ignited.in

दशमेश भावफल

1. यदि दशमेश लग्न में हो तो जातक विद्वान प्रसिद्ध कवि बाल्यकाल में रोगी तत्पश्चात ठीक स्वास्थ्य

2. यदि द्वितीय भाव में दशमेश हो तो जातक धनी गुणवान राजा से सम्मानित परोपकारी व पिता और अन्य कुटुंबी जनों से सुख भोगने वाला होता है

3. यदि दशमेश तृतीय भाव में हो तो जातक सहोदरो नौकर चाकरों का सुख भोगने वाला शुभ वक्ता सत्य प्रिय होता

4. दशमेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक प्रसन्न चित्त, मातृ भक्त, गुणवान, धनी जमीन जायदाद से युक्त होता है

5. यदि दशमेश पंचम भाव में हो तो जातक विभिन्न विद्या में पारंगत, प्रसन्न चित्त धनी होता है

6. यदि दशमेश छठे भाव में हो तो जातक पित्र सुख से वंचित रहता है, यद्यपि वह कर्म में निपुण होता है परंतु धनहीन व शत्रु पीड़ित रहता है

7. यदि दशमेश सप्तम भाव में हो तो जातक पत्नी सुख से वंचित रहता है बुद्धिमान, गुणवान, वाकपटु सत्यवादी व धार्मिक होता है

8. यदि दशमेश में अष्टम भाव में हो तो जातक हीन कर्म करने वाला होता है जीविका उपार्जन में असमर्थ दूसरों को दोष देने वाला परंतु दीर्घायु होता है

9. यदि दशमेश नवम भाव में हूं तो जातक राजवंश का ना होकर भी राजा बनता है इस योग में उत्पन्न जातक यदि निम्न वर्ग का भी हो तो भी राजा के समान वैभव प्राप्त करता है

10. दशमेश यदि दशम भाव में हो तो जातक बहु कार्य में निपण, साहसी, सत्य वक्ता, बड़ों का आदर करने वाला होता है

11. यदि दशमैश एकादश भाव में हो तो जातक धन पुत्र बा सुखों से युक्त होता है

12. यदि दशमेश द्वादश भाव में हूं और पीड़ित हो तो जातक का धन राजकार्य में वे होता है कार्य में निपुण होते हुए भी शत्रुओं से पीड़ित रहता है

एकादशेश भावफल

1. यदि एकादशैश लग्न में हो तो जातक का सात्विक शुद्ध विचार वाला हृदय से धनी व सुखी होता है सम व्यवहार कुशल कभी स्वयं हित में साधना करने वाला होता है।

2. यदि एकादशेश द्वितीय भाव में हो तो जातक सर्व सुख संपन्न दानवीर होता है।

3. यदि एकादशेश तृतीय भाव में हो तो जातक हर कार्य में निपुण,धनी,सहोदरों भूमि भवन कष्ट भोगने वाला होता है।

4. पंचम भाव में एकादशेश हो तो जातक की संतान विद्वान,गुणवान व सुखी होती है।जातक स्वयं भी अत्यंत बुद्धिमान एवं धन से समृद्ध होता है।

5. छठे भाव में एकादशेश हो तो जातक ससुराल से धन पाने वाला उदार हृदय गुणवान काम भावना से वशीभूत पति के वश में रहने वाला होता है।

6. अष्टम भाव में एकादशेश हो तो जातक कार्य में हानी उठाने वाला पर दीर्घायु होता है। उसकी स्त्री का निधन उसके जीवन काल में ही हो जाता है।

7. नवम भाव में एकादशेश हो तो जातक भाग्यशाली निपुण, राज्य से सम्मानित व उत्तम धन से युक्त ,जितेंद्रिय होता

8. लाभ या एकादश भाव में एकादशेश हो तो जातक सभी कार्यों में सफल एवं लाभाच्वित विद्या व सुख से सदैव वृद्धि पाने वाला होता है

9. यदि द्वादश भाव में एकादशेश हो तो जातक सदैव शुभ कार्यों हेतु व्ययशील बहु पत्नी युक्त तथा मलेच्छो से मित्रता रखने वाला होता है।

द्वादशेभावफल

1. यदिद्वादशेश लग्न में हो तो जातक दुर्बल कब करोगी खर्चीला धन और विद्या से हीन होता है।

2. यदि द्वादशेश द्वितीय भाव में हो तो जातक शुभ कार्यो में व्यय करने वाला, धार्मिक,मृदु बचन बोलने वाला गुणवान,अतिसुख संपन्न होता है

3. यदि द्वादशेश तृतीय भाव में हो तो जातक सहोदर सुखहीन समीप के लोगों से घृणा द्वेष रखने वाला स्वार्थी होता है

4. द्वादशेश यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक मातृसुख हीन तथा भवन वाहन भूमि इत्यादि का निरंतर हास हो पाने वाला होता है

5. पंचम भाव में द्वादशेश हो तो जातक पुत्र विहीन तथा तीर्थ यात्राओं को करने वाला होता है।

6. सप्तम भाव द्वादशेश में जातक अपनों से ही वैमनस्य या दुश्मनी रखने वाला होता है। साथ ही क्रोधी पापी व दुखी भी होता है। सप्तम भाव मैं जातक की पत्नी के कारण धन हानि पत्नी सुख में कमी और स्वयं भी शारीरिक बल से हीन होता है।

7. द्वादशेश यदि अष्टम भाव में हो तो जातक सदा लाभ पाने वाला प्रिय वचन भाषी मध्य मध्यम आयु वाला गुणों से परिपूर्ण होता है

8. नवम भाव में द्वादशेश हो तो जातक गुरु का अपमान का दोषी बड़ों का अपमान करने वाला मित्र द्रोही होता है

9. द्वा- दशेश यदि दशम भाव में हो तो जातक राजकुल में व्यय वाला पिता का अल्प सुख भोगने वाला होता है

10. एकादश भाव में द्वादशेश हो तो प्रायः जातक हानी उठाने वाला दूसरों द्वारा परिवर्धित, पोषित होता है

11. द्वादशेश द्वादश भाव में हो तो जातक खर्चीला शरीर सुख में कमी वाला तथा क्रोधी होता है

उपसंहार

इस तरह कुंडली के 2 भाव अलग-अलग स्थानों पर अपनी स्थिति और अपने बल आदि के अनुसार अपना फल देते हैं उसी के अनुसार जातक के जीवन में स्थित परिस्थितियां निर्मित होती हैं और जातक का भाग्य उसी के अनुसार कार्य करता है।

सन्दर्भ

1) वृहद पाराशर होरा शास्त्रम (भाग 1 और 2)

2) लघु पाराशरी (सुरेश चंद्र मिश्रा)

Corresponding Author

सीमा नायक*

एमए, (स्वर्ण पदक विजेता), ज्योतिष शास्त्र, जीवाजी यूनिवर्सिटी, ग्वालियर

www.ignited.in